रोजगार गारण्टी योजना मा बहुतै ज्यादा गड़बड़ी हवै। यहिका देखै खातिर खबर लहरिया पत्रकार दुइ गांव गई। हुंवा दलित मेहेरियन के रोजगार के बारे मा गहराई से जांच करिन अउर अम्बेडकर गांव के तहत मड़इन का मिलै वाला लाभ के भी जांच करिन। यहिके के बारे मा या पेज मा बड़ी खबर मा लिखा गा हवै।

पता लाग योजना के गड़बड़ी

रोजगार गारन्टी योजना 1 अप्रैल 2008 से पूर देश मा लागू तौ होइगे, पै जउन काम के गारन्टी हवै वा शायद आज तक पूर नहीं भे। यहिमा कइयौतान के दिक्कते हवैं। जइसे कि काम कम मिलत अउर मजदूरी समय से नहीं मिलत। काम मा जाति का भेदभाव, प्रधान आपन घर मा मड़इन के जाब कार्ड रख लेब अउर अपने मन से मजदूरी चढ़ा देब।

इं समस्या महुवा ब्लाक के पनगरा अउर हड़हा गांव मा देखी गई। पनगरा गांव के आबादी बारह हजार चार सौ दुइ हवै। हिंया के वार्ड नम्बर ग्यारह मा वाल्मिकी परिवार के पन्द्रह घर हवै। या गांव मा छुआ–छुत आज भी हवै। यहिका असर वाल्मिकी परिवार के जीवन मा बुरा प्रभाव डारत हवै। पच्चीस साल के राजकुमारी का कहब हवै– ''हमका छुआ–छूत के कारन गन्दगी अउर सफाई का काम दीन जात हवै। या फेर फावड़ा वाला काम जउन बहुत मेहनत का होत हवै वा दीन जात हवै। नाला अउर तालाब के खुदाई मा हमका खूब उन्नीस दिन काम मिला रहै। काम के समय हमैं कउनौ दूसर जाति के मड़ई मिट्टी से भरी डलिया नहीं उठावत रहै।''

तीस साल के सावित्री बतावत हवै– ''जाब कार्ड बनै के बाद भी काम नहीं मिला आय। परिवार का पालन पोषण बांस के टोकरी बना के चलावत हौं। मोर जाब कार्ड 30 मार्च 2006 मा बना रहै। जउन आज भी कोरा धरा हवै।''

यहिनतान से मड़इन का छुआ–छूत के कारन कइयौतान के समस्या झेलै का परत हवै। या मुद्दा के बारे मा पंचायत मित्र अतुल कुमार अउर प्रधान जगदीश प्रसाद से बात कीन गे। इनकर कहब हवै– ''मड़ई नरेगा का काम नहीं करै चाहत आय। काहे से हिंया पहाड़न मा पत्थर तोड़ै का काम चलत हवै। हुंवा उनका ज्यादा मुनाफा होत़ हवै।'' अगर मड़इन का काम के ज़रूरत न होत, तौ उंई इनतान के बात काहे करत। काम मांगै वालेन का भी सही जानकारी नहीं रहै। या मारे उंई हक के मांग नहीं कइ पावत।

यहिनतान दूसर गांव हड़हा मा भी बहुतै गड़बड़ी देखै का मिली। जेहिका देख के बहुतै हैरानी भे। हिंया का प्रधान कासिम अली लगातार चार दरकी प्रधान बन चुका हवै। मड़ई यहिके बरताव से तंग आ गे हवैं।

हिंया के जग प्रसाद का कहब हवै– ''मोर जाब कार्ड के संख्या एक सौ इकत्तर हवै। काम तौ पांच–छह दिन मिला हवै, पै एकौ दिन के मजदूरी नहीं दिहिस, न तौ जाब कार्ड मा मजदूरी चढ़ाइस आय। प्रधान काम तौ करा लेत हवै, पै मजदूरी मांगै मा गालीगलौज करत हवै अउर मारैं के धमकी देत हवै।''

राजरानी का जाब कार्ड संख्या तिरपन हवै वा 10 अप्रैल 2007 मा बना रहै। काम तौ मिला हवै, पै मजदूरी नहीं मिली। प्रधान के हिसाब से पूर गांव मा चार सौ जाब कार्ड बने हवै। उनमा काम तौ मिला हवै, पै मजदूरी नहीं मिली। ज्यादातर या गांव मा मड़ई यहिका लइके परेशान हवै। या समस्या का लइके खबर लहरिया पत्रकार प्रधान से बात करिन।

प्रधान का कहब हवै–''पंचायत मित्र अउर सचिव विरेन्द्र द्विवेदी इं जानकारी राखत हवै। सचिव के सस्पेन्ट मतलब कुछ समय का नौकरी से निकाल दीन गा हवै। यहै से मजदूरी रूक गे हवै, पै अब 30 जून तक सबै के मजदूरी दइ देहूं।'' सरकार के योजना तौ नीक हवै, पै उंई ठीक से नहीं चलत आहीं। यहै कारन हवै कि हमार देश के गरीब जनता इन लाभन से कोषन दूर हवै योजना के हाल यहिनतान रही, तौ योजना का लाभ न मिली।